बैरीमोर



लेखक: डॉन **फ्रीमन**

हिन्दी: मोहिनी कुमार

बैरीमोर एक अदाकार भालू, सर्कस से इतना प्यार करता है कि उसकी पिछली प्रस्तुति उसे उदास कर देती है। पर जब उस के सर्कस का प्रबंधक उससे कहता है कि अगले वसंत में कुछ नया करने का सोचे, तब बैरीमोर को परेशानी होती है कि वह ये दो काम एक साथ कैसे करे, नयी योजना भी बनाए और शीतनिद्रा में भी जाए।

सर्कस वाले सामान बाँधकर दक्षिण की ओर चल दिए और बैरीमोर को उसकी गाड़ी के अपने डिब्बे में चिंतित अवस्था में अकेला छोड़ गए। उसने अप्रैल माह का अलार्म लगा दिया और आखिर में उसकी शीतनिद्रा शुरू होती है। जब अलार्म बजता है तो वसंत आ गया है और सर्कस किसी भी वक्त आ सकता है। बैरीमोर अभी तक किसी नए नाटक के बारे में सोच नहीं पाया है; पर अचानक उसके दिमाग में बिजली-सी कौंधी और उसकी योजना तैयार हो गई।

बैरीमोर

लेखक: डॉन **फ्रीमन**

हिन्दी: मोहिनी कुमार





बैरीमोर

लेखक: डॉन **फ्रीमन**

हिन्दी: मोहिनी कुमार

PUFFIN BOOKS



एक बार नवंबर की रात में एक बड़े चौड़े स्थान जोश से भरी भीड़ अदाकारों को हमेशा से ज्यादा प्रोत्साहित कर रही थी।

यह इस मौसम की अंतिम प्रस्तुति थी। जल्दी ही सर्कस से जुड़े सब लोग दक्षिण की ओर धूप सेकने चले जाएँगे, केवल बैरीमोर, कलाकार भालू, को छोड़कर सब लोग। उसका इरादा हर साल की तरह इस सर्दी में भी शीतनिद्रा में जाने का था।



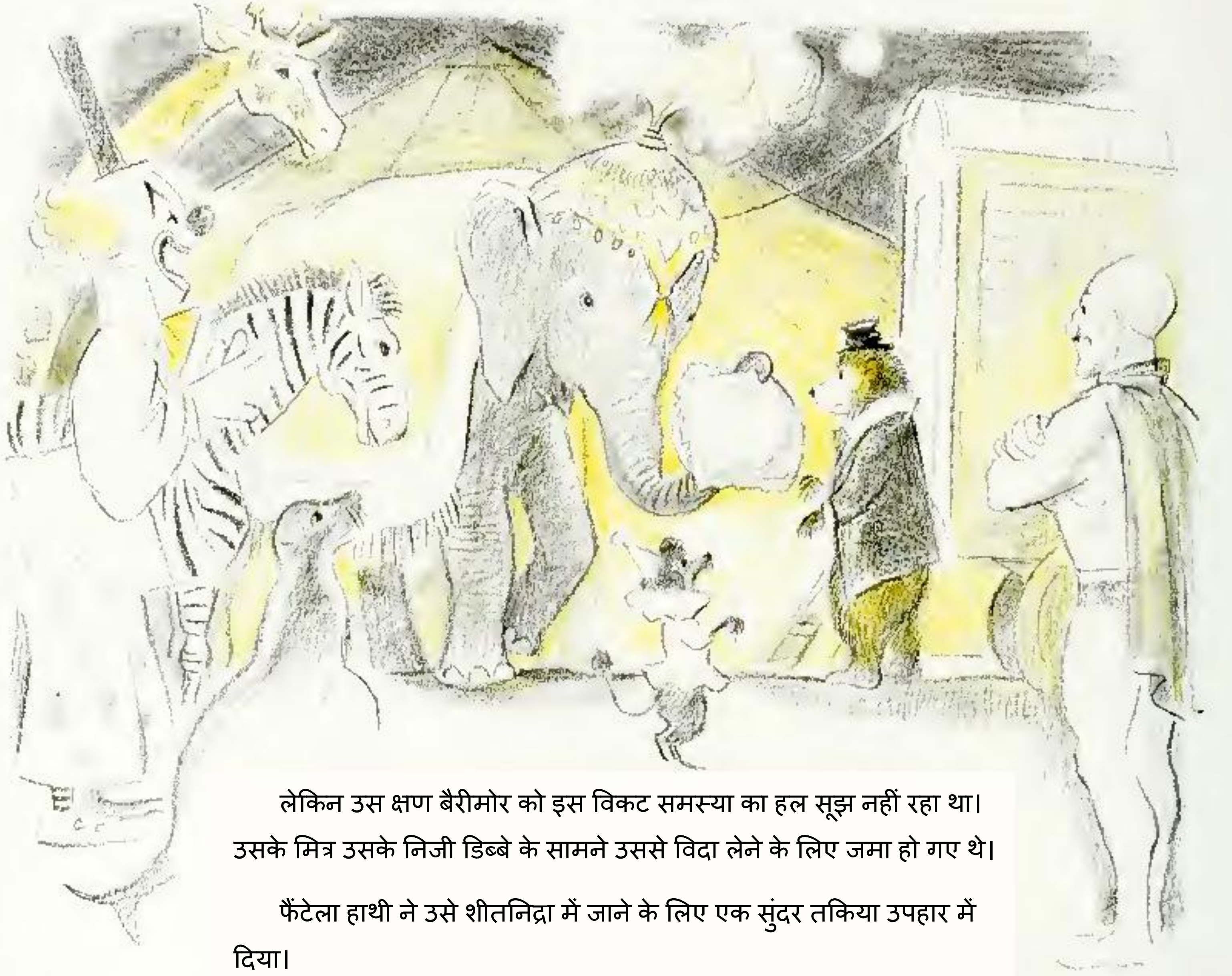
बैरीमोर ने जब अंतिम बार झुक कर सलाम किया तो वह दुखी था।

उसे सर्कस से इतना प्यार था कि वह चाहता था कि सर्कस सारा साल चले।

उस रात बाद में सर्कस का प्रबंधक बैरीमोर को गंभीर बात करने के लिए अलग ले गया, उसने कहा, "माफ करना बैरी, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ, अगर तुम अगले साल भी हमारे सर्कस के साथ रहना चाहते हो, तो कुछ नई कलाकारी की योजना बनानी होगी। सर्कस के घेरे में केवल एकपहिया साइकिल चलाना पुराना करतब हो गया है।"

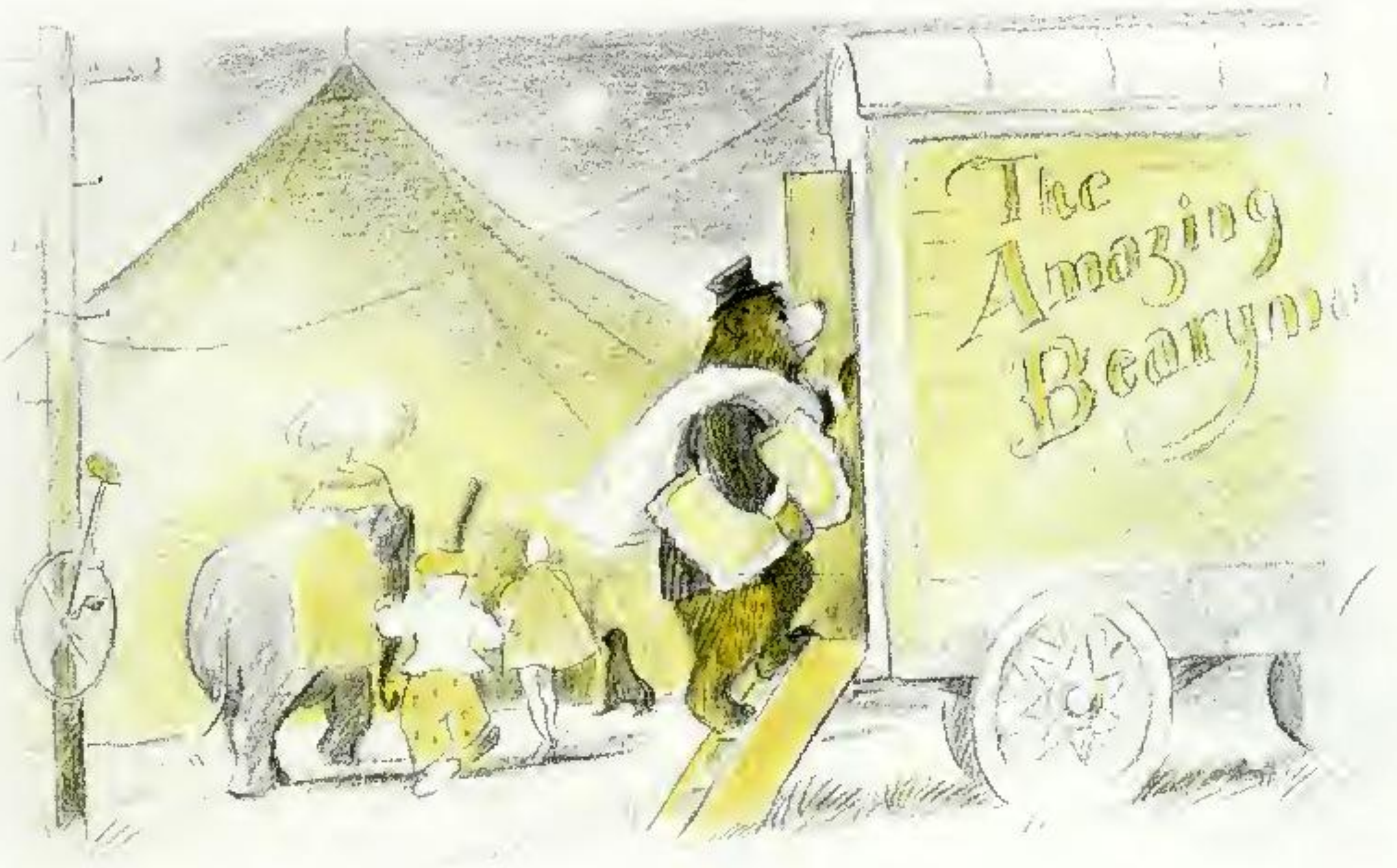


बैरीमोर समझ गया, मगर चिंतित हो गया। उसके लिए नई प्रस्तुति के लिए सोचना और शीतनिद्रा में जाना - दोनों एक साथ करना कठिन समस्या थी।



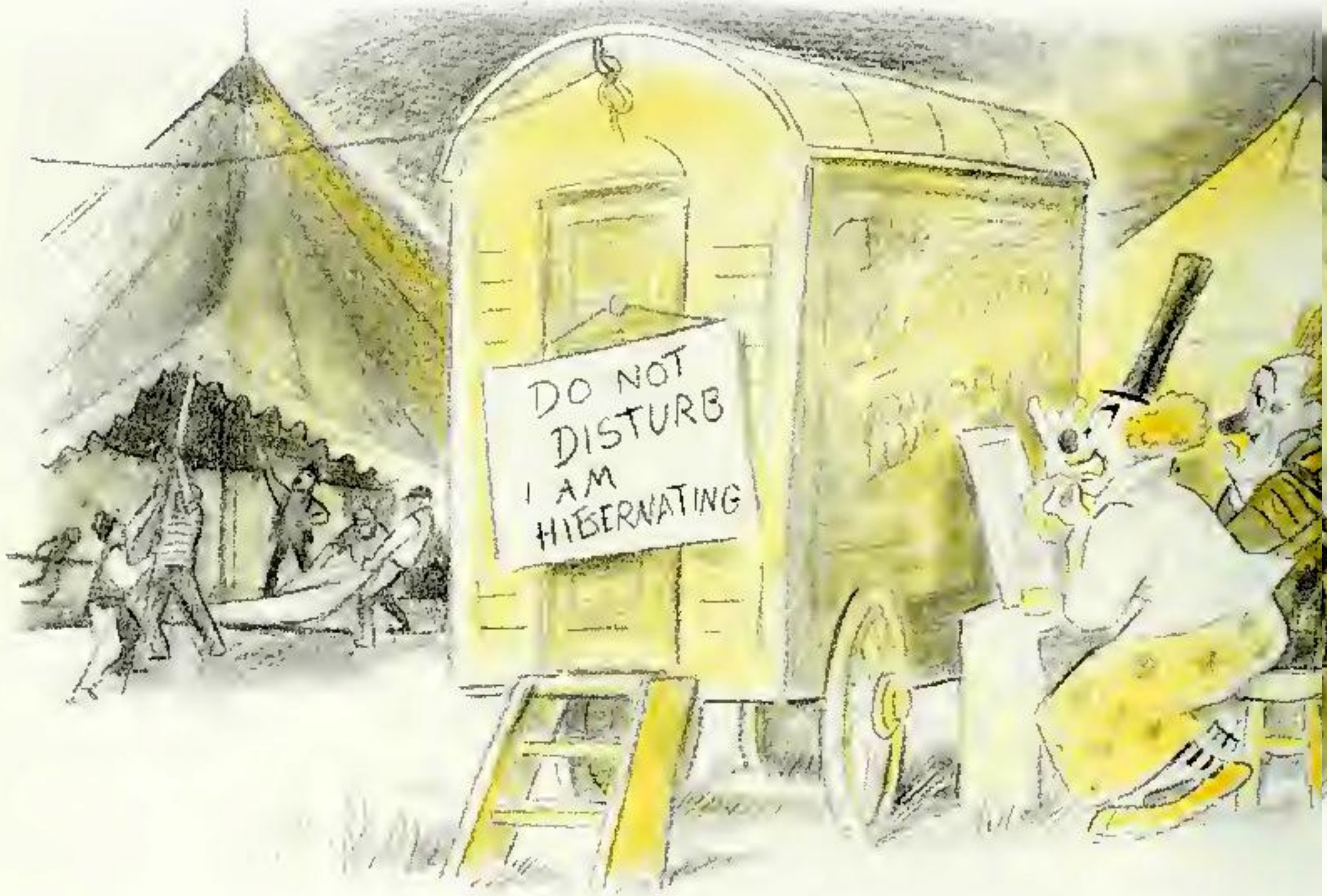
लेकिन उस क्षण बैरीमोर को इस विकट समस्या का हल सूझ नहीं रहा था। उसके मित्र उसके निजी डिब्बे के सामने उससे विदा लेने के लिए जमा हो गए थे।

फैंटेला हाथी ने उसे शीतनिद्रा में जाने के लिए एक सुंदर तकिया उपहार में दिया।



बैरीमोर के दिल को छू गया यह उपहार। उसने उत्साहित होकर हाथी को धन्यवाद दिया और कहा, "आशा है, अगले वसंत में मिलेंगे।"

फिर उसने अपनी एकपहिया साइकिल टेलीफोन के खंभे पर लटकाई, कपड़े सुखाने की रस्सी से रात की कमीज उतारी और अपने डिब्बे में चला गया।



कुछ क्षणों के बाद उसने अपने डिब्बे के दरवाजे पर तख्ती लटका दी, जिसपर लिखा था, "मैं शीतनिद्रा में जा रहा हूँ, मुझे तंग मत करना।"



जोकर जब अपना-अपना मेकअप साफ कर रहे थे, श्रमिकों ने जल्दी-जल्दी शामियाने और कनात भार वाहनों में लाद दिए।

एक खास रेलगाड़ी पूरे सर्कस को सर्दी के ठिकाने, फ्लोरिडा में ले जाने के लिए तैयार इंतजार कर रही थी।



"मुझे शीतनिद्रा कतई नापसंद है।" बैरीमोर अपने बिस्तर में घुसते हुए बड़बड़ाया, मगर हम भालुओं को यह करना ही पड़ता है, क्योंकि जितना जल्दी हम सोएँगे, उतनी ही जल्दी वसंत आएगा।"



जल्द ही वह करवट बदलने लगा। "अरे मैं तो भूला ही जारहा था" अचानक उठ बैठा। "मुझे किसी नई कलाकारी की योजना बनानी है। शायद थोड़ा संगीत कुछ मदद करे और मुझे प्रेरणा दे।"



वह बिस्तर से उछल कर निकला। उसने अपने पुराने किस्म के फोनोग्राफ (रिकार्ड प्लेयर) में चाबी भरी और सर्कस का संगीत लगा दिया।



बैरीमोर अपनी बाहें झुलाता हुआ और पंजों से ताली बजाता हुआ फर्श पर नाचने लगा।

फिर वह अपनी नाक की नोक पर गेंद टिका कर सीढ़ी पर चढ़ने-उतरने लगा।

बदकिस्मती से जो कुछ वह सोच रहा था, वह पहले कर चुका था, उसमें कुछ नयापन नहीं था। बल्कि अपने करतब दिखाने वाले मित्रों के साथ बेहतर करता था, जो समुद्री जीव सील की तरह करतब करते थे।



जब फोनोग्राम की चाबी खतम हो गई, बैरीमोर थकावट और निराशा से बिस्तर पर गिर गया।

फिर भी वह एक झपकी भी नहीं ले पाया, क्योंकि उसके गले में गुदगुदी हो रही थी। वह बड़बड़ाया, "एक भालू अगर प्यासा हो तो नहीं सो सकता।"



वह उठा और पानी के पंप के पास पानी पीने आ गया।

वहाँ सर्कस का कोई निशान भी नहीं था, बस एक खाली मैदान।



बैरीमोर वापस अंदर गया और बिस्तर में घुस गया।

अचानक उसे याद आया, "मुझे कैसे पता चलेगा कि उठने का समय हो गया है?" अपने घुंघराले बालों उंगलियाँ घुमाते हुए बोला, "ओह मुझे पता है। मैं अपनी घड़ी में चाबी भरूँगा।"



उसने घड़ी में अप्रैल का अलार्म लगा दिया।



फिर भी बैरीमोर को नींद आने में कठिनाई हो रही थी। "ओह, ओ, ठीक है," वह भुनभुनाया, "मेरे पास पूरी सर्दी का समय है अपनी नई कलाकारी के बारे में सोचने ....।"

पर वाक्य खतम करने से पहले ही उसकी आँखें बंद हो गईं। आखिर वह सो गया।



बाहर उसके डिब्बे को बर्फ की चादर ने पूरा ढक लिया। दिन, हफ्ते, महीने धीरे-धीरे बीत गए।

सोते हुए बैरीमोर ने सपना देखा कि उसके सर्कस के
मित्र गोलाकार तालाब के पास धूप खाते हुए मजे कर रहे थे।



फैंटेला तालाब में एक बड़े से रबड़ के तकिए पर पंखा झलते हुए तैर रही थी।
"पता नहीं हमारा दोस्त बैरीमोर क्या कर रहा होगा!" वह स्पीडी ज़ेब्रा से बोली।

स्पीडी ज़ेब्रा ने पानी पर छपाक करते हुए कहा, "ओह! वो शायद अपनी अगली
अदाकारी के बारे में सोच रहा होगा।"

उसी समय एक बहुत बड़ा सुनहरा फोन घनघनाया। वह बहुत जोर से बज रहा था।
बैरीमोर सोचने लगा, "फैंटेला फोन क्यों नहीं उठा रही है?"

“अरे हाँ, इसका ज़रूर कोई सही कारण होगा।”



यह फोन नहीं था,यह उसकी खुद की घड़ी थी जो उसे अलार्म बजा कर जगा रही थी।

आज अप्रैल की पहली तारीख थी।



बैरीमोर अचानक जाग गया। "मैं एक क्षण के लिए सो गया था। उसने घड़ी का अलार्म बंद कर दिया। "अरे नहीं! अप्रैल आ भी गया? सर्कस कभी भी आ सकता है और मैं अभी तक अपने नए करतब की योजना नहीं बना पाया हूँ।"

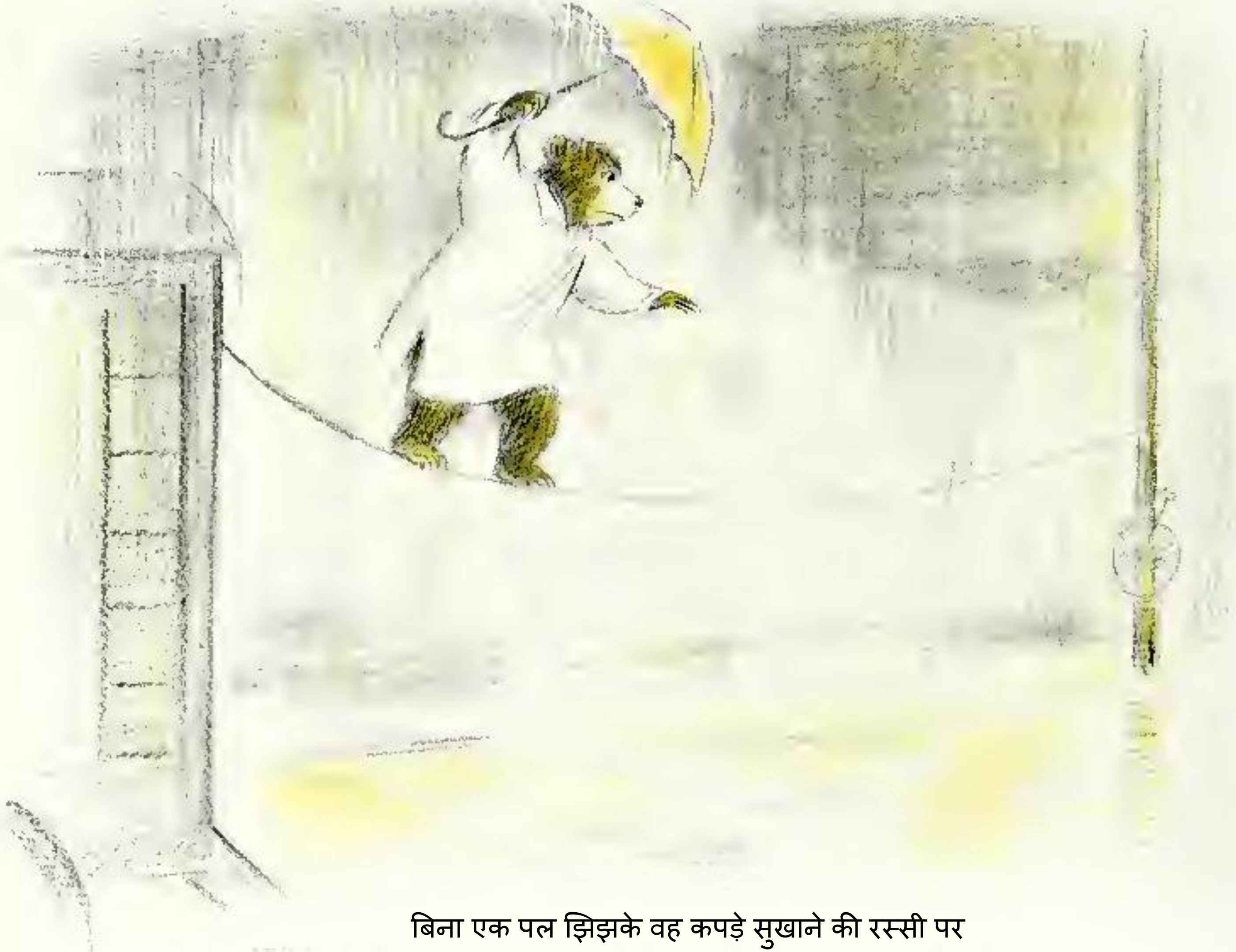


वह भागकर दरवाजे पर गया और देखा। वसंत की सुबह बरसात हो रही थी, धीरे-धीरे।

"ये देखो, मैं अपनी एकपहिया साइकिल लाना भूल गया।" वह चिल्लाया, "अगर मैंने उसे थोड़ा और बाहर छोड़ दिया तो उसमें पूरी तरह जंग लग जाएगा।"



जमीन चिकनी और कीचड़ से भरी थी। बैरीमोर भीगना नहीं चाहता था। उसने अपना छाता खोला और सीढ़ी से डिब्बे की छत पर चढ़ गया।



बिना एक पल झिझके वह कपड़े सुखाने की रस्सी पर
ठीक-ठीक संतुलन बनाते हुए एक-एक कदम जमाकर चल पड़ा।



जब वह बिजली के खंभे तक पहुँचा तो सावधानी से झुका और अपनी एकपहिया साइकिल उठा ली। वह मन ही मन बुदबुदाया, "मैं निश्चय ही इस दलदल में साइकिल चलाकर नहीं जा सकता।" उसने तुरंत निश्चय किया कि वह कपड़े सुखाने की रस्सी पर ही साइकिल चलाकर ले जाएगा।



बैरीमोर ने बहुत आसानी से रस्सी पर साइकिल
चलानी शुरू कर दी। अचानक आधे रास्ते पर.........



उसने नीचे देखा, पानी में अपना प्रतिबिंब देखा। वह चिल्लाया,
"मुझे मिल गया।मुझे अपनी नई प्रस्तुति की योजना दिख गई।



जोश और उत्तेजना से भरकर बैरीमोर ने अपना संतुलन खो दिया और वह गिर गया।



करस्पैश, धड़ाम! ठीक उस कीचड़ के बीच में।



बैरीमोर को अपने इस तरह गिरने का बिलकुल दुख नहीं था। उसकी समस्या का हल मिल गया था। अभी वह मुस्कराता हुआ बैठा हुआ था कि उसे बहुत दूर से एक रेलगाड़ी के आने की आवाज सुनाई दी।

उसके मित्र फ्लोरिडा में छुट्‌टी बिता कर आ रहे थे।



जल्द ही बरसात बंद हो गई और सूरज अपने पूरे प्रकाश के साथ निकल आया। इसका मतलब था कि सर्कस उसी रात अपने पूर्व निर्धारित समय पर शुरू हो सकता था।

एक तरफ श्रमिक कनात और शामियाना लगाने में व्यस्त थे दूसरी तरफ फैंटेला ने बैरीमोर को अपनी सूँड से फव्वारा मार कर नहला दिया, जिसकी उसे जरूरत थी।



शाम को सर्कस के प्रबंधक ने बैरीमोर से पूछा, हाँ तो बैरीमोर, तुम ने नए करतब के बारे में कुछ सोचा है? हमें तुम पर विश्वास है। भूलना मत।"

बैरीमोर का चेहरा चमक उठा, जैसे किसी भालू का मुख किसी रहस्य को छिपाने के लिए चमकता है। उसने कहा, "प्रतीक्षा करो और देखो। मुझे बस एक ऊँची रस्सी और जाल दे दो।"



ठीक आठ बजे शाम को उस मौसम का पहला मंचन शुरू हो गया।

जब बैरीमोर ने भीड़ का शोरगुल और सर्कस के बैंड का संगीत सुना तो उसके कान खड़े हो गए, जीवंत हो गए। जब उसे पॉपकॉर्न और कॉटनकैंडी की खुशबू आई तो उसका धैर्य टूटने लगा। वह तुरंत करतब दिखाने जाना चाहता था।

जब बैरीमोर ने सीढ़ी पर ऊँचाई पर चढ़ना शुरू किया तो प्रबंधक ने घोषणा की, "महिलाओं और पुरुषों, अब हम गर्व से अद्भुत, एक और इकलौते अद्भुत, बैरीमोर को प्रस्तुत करते हैं। यह अदाकारी पहली और नई है, जो दुनियाभर में पहले किसी ने नहीं देखी होगी।"



श्रोता एकदम शांत हो गए। सर्कस के सारे कलाकार मंत्रमुग्ध थे। ड्रम बजाने वाले ने जोर से ड्रम बजाया।



सर्कस के प्रबंधक का मुँह खुला का खुला रह गया। जब उसने साहसी भालू को उस ऊँची रस्सी पर एक खंभे से सामने के दूसरे खंभे तक एकपहिया साइकिल चलाते हुए देखा, वह भी बिना जाल की जरूरत के।



बधाइयों का नाद आकाश गुँजाने वाला था।

हाँ, बैरीमोर की नई कला सफलतम और दर्शनीय थी।

रात-भर में वह महान सितारा बन गया था।

फिर कभी भी उसे शीतानिद्रा में जाने की जरूरत नहीं पड़ी।